

वस्तुएँ सँभालने तथा उनके साथ खेलने से छोटे बच्चे कैसे सीखते हैं

रोमिला सोनी*

प्रारंभिक बाल्यावस्था में हमें छोटे बच्चों को एक ऐसा परिवेश देना चाहिए, जिसमें बच्चों को अपनी पसंद और रुचि के खिलौने तथा वस्तुओं के साथ खेलने और सँभालने के अवसर मिलें। इस तरह के परिवेश में बच्चे क्रियाशील रहते हैं और साथ ही उनको वस्तुओं के साथ क्रिया करते समय सोचने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। प्रस्तुत खेल में लेखिका ने इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया कि बच्चे सामग्री, खिलौने तथा वस्तुओं को संभालते हुए तथा उनके प्रयोग करते हुए क्या और कैसे सीखते हैं।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षाविदों द्वारा खेलों को सामाजिक, भावात्मक और बौद्धिक विकास के मार्ग के रूप में स्वीकार किया गया है। अनेक शिक्षाविदों का यह मानना है कि बच्चों को उनकी रुचि की वस्तुओं, खिलौने व क्रियाकलापों में व्यस्त रखना चाहिए, ताकि वे अपने परिवेश के साथ सार्थक अंतःक्रिया द्वारा सीखने योग्य बन सकें। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षाविद इस बात से भली-भाँति अवगत हैं कि बच्चे कार्यपत्रिकाओं की अपेक्षा हाथ से क्रियाकलाप करके बेहतर सीखते हैं। खेल बच्चों को वस्तुओं को सँभालने, क्रियाकलापों में भाग लेने, नए-नए तरीके अपनाने, समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने, अपनी जिज्ञासा शांत करके और नई खोजें करने के अवसर देते हैं।

जिन बच्चों को उनकी रुचि की गतिविधियों में व्यस्त रहने और उनकी पसंद की खेल सामग्री, खिलौने तथा वस्तुओं को सँभालने के अवसर दिए जाते हैं, उनमें स्वायत्तता और प्रभावशीलता की समझ उत्पन्न होती है, वे प्रवीणता प्राप्त करने की ओर प्रेरित होते हैं, उनमें आत्मनिर्देशन, आत्मविश्वास जैसे गुण विकसित होते हैं और स्वमूल्य की भावना आती है।

क्या हम वास्तव में बच्चों में आत्मनिर्भरता, नेतृत्व, सृजनात्मक चिंतन व आत्मसम्मान विकसित करना चाहते हैं या हम स्वयं को ऐसी प्रणाली जारी रखने वाले के रूप में देखते हैं जो दब्बूपन, अनुपालन और निर्भरता को महत्व देती है। इस लेख में पियाज़े के सिद्धांत पर आधारित इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बच्चे वस्तुओं को सँभालते

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

और कुशलतापूर्वक उनका प्रयोग करते हुए क्या और कैसे सीखते हैं। पियाज़े (1967) ने बतलाया कि वस्तुओं के साथ क्रिया करते समय बच्चे दो भिन्न प्रकार के ज्ञान का सृजन करते हैं —

प्रत्यक्ष ज्ञान (physical knowledge)

वस्तुओं के दिखाई देने वाले गुणों और प्रत्यक्ष घटनाओं को संदर्भित करता है। इसका निहितार्थ यह है कि बच्चों को परिवेश में उपस्थित वस्तुओं के साथ क्रिया करने के अवसर दिए जाने चाहिए और उन वस्तुओं पर उनके कार्यों के प्रति प्रतिक्रिया यानि कि सँभालने, प्रयोग करने और ध्यान देने की योग्यता का अवलोकन किया जाना चाहिए। इससे बच्चे को स्वयं विभिन्न वस्तुओं के प्रत्यक्ष गुणों (physical knowledge) को खोजने में सहायता मिलेगी। प्रत्यक्ष ज्ञान उन वस्तुओं का ज्ञान है, जिन्हें देखा जा सकता है। विभिन्न वस्तुओं पर क्रियाएँ करने, जैसे उन्हें धक्का देने, निशान बनाने या गिराने से हमें प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होता है। अधिकांश बच्चों में अपने परिवेश की छानबीन करने की तीव्र इच्छा होती है। मिट्टी के एक गड्ढे (Mud Puddle) का प्रबंध करें, बच्चे स्वयं ढूँढ़ निकालेंगे, गोले बनाएँगे, घुमाएँगे, थपथपाएँगे, मिलाएँगे, मसलेंगे और अधिकतर सब गंदा कर देंगे। बच्चे गेंद को किक करते हैं, उसको मारते हैं और गिरा देते हैं। एक बच्चा गेंद के गुणों यानि उसकी कोमलता और भार को तब तक नहीं जान सकता जब तक वह उस पर चोट नहीं करता, या उसे उठाता नहीं और उसे गिरता या उछलता हुआ नहीं देखता। यह भी प्रत्यक्ष ज्ञान के उदाहरण हैं।

तार्किक गणितीय ज्ञान (Logic Mathematical knowledge) में शामिल हैं —

1. बच्चों में वस्तुओं में समानता और विभिन्नता ढूँढ़ने की योग्यता का विकास और इसी आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण करने की योग्यता का विकास।
2. वस्तुओं को किसी एक आधार पर क्रम से लगाने की योग्यता का विकास, जैसे — बड़े से छोटे की ओर या इससे उलटा।
3. संख्या एवं मात्रा की धारणा का विकास

तार्किक गणितीय ज्ञान

यह प्रत्यक्ष ज्ञान से भिन्न है, क्योंकि इसमें वस्तुओं की विशेषताओं के स्थान पर दो या अधिक वस्तुओं के बीच का संबंध शामिल होता है। उदाहरण के लिए, यदि हम कई वस्तुओं को एक साथ इकट्ठा कर लेते हैं और यह सोचते हैं कि हमारे पास चार वस्तुएँ हैं तो यह चार का होना किसी एक वस्तु का अपना गुण नहीं है, यह एक संबंध है जो हम वस्तुओं के समूह पर थोपते हैं। लाल, पीला, हरा या नीला रंग होना किसी एक वस्तु की विशेषता कही जा सकती है, क्योंकि ऐसा कहना किसी वस्तु के अन्य वस्तुओं के साथ संबंधों पर निर्भर नहीं करता। ऐसे में बाह्य दुनिया में प्रत्यक्ष ज्ञान का अवलोकन किया जाना है, जबकि तार्किक गणितीय ज्ञान सीखने वाले द्वारा सृजित होता है। तार्किक गणितीय ज्ञान का सृजन करने के लिए हम वस्तुओं के साथ कार्य करते हैं उन्हें एक-दूसरे से जोड़ते हैं और उनकी क्रियाओं व प्रतिक्रियाओं का अवलोकन कर सकते हैं।

तार्किक गणितीय ज्ञान का सृजन तब होता है जब हम वस्तुओं के बीच संबंध बिठाते हैं जैसे कि जब हम दो गेंदों, एक लाल और एक नीली की तुलना करते हैं और यह सोचते हैं कि ये दोनों भिन्न हैं। एक व्यक्ति जो दो भिन्न वस्तुओं को इस संबंध में बिठाता है तब एक अलग प्रकार के संबंध का सृजन होता है। भिन्नता लाल और नीली गेंद में नहीं होती। यह केवल उस व्यक्ति के मस्तिष्क में होती है जो उन दो गेंदों को इस संबंध में रखता है।

पियाज़े के विभेदन का एक अन्य दृष्टिकोण उसकी यह सोच है कि ज्ञान दो स्रोतों से सृजित होता है — बाह्य और आंतरिक। प्रत्यक्ष ज्ञान का स्रोत आंशिक रूप में बाह्य है और तार्किक गणितीय ज्ञान का स्रोत आंतरिक है।

ब्लॉक निर्माण के क्षेत्र में एक बच्चा जब ऊँची मीनार बनाने के लिए कुछ और अधिक बेलनाकार ब्लॉक्स ढूँढ़ता है, तब वह मुख्य रूप से तार्किक गणितीय कार्य में व्यस्त होता है। ब्लॉक्स के ढेर में से ढूँढ़ते समय वह विभिन्न ब्लॉक्स के बीच संबंध बना रहा होता है कि कौन-सा ब्लॉक बेलनाकार है और कौन-सा नहीं। जब बच्चा मीनार के चार ब्लॉक्स के ऊपर बेलनाकार ब्लॉक रखता है, तब वह मुख्य रूप से प्रत्यक्ष कार्य में लगा होता है। क्योंकि यदि ब्लॉक्स को ध्यान से सँभालकर न रखा जाए तो मीनार ढह

सकती है, अतः प्रत्यक्ष ज्ञान को गणितीय ज्ञान से अलग करना असंभव है।

इसी प्रकार भिन्न-भिन्न रंगों की गेंदों की तुलना किए बिना एक लाल गेंद को पहचानना असंभव होगा। यह संबंध या वर्गीकरण वस्तुओं के गुणों का निरीक्षण करने के लिए आवश्यक है। जब बच्चे एक धागे में अलग-अलग रंगों के मोती पिरोते हैं तो वे बुनियादी और क्रमसूचक संख्या सीखने के साथ-साथ नमूना बनाना और रंग विभेदीकरण भी सीख रहे होते हैं।

तार्किक गणितीय ज्ञान और प्रत्यक्ष ज्ञान एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं और साथ-साथ ही विकसित होते हैं। जैसे — जैसे बच्चों का तार्किक गणितीय ज्ञान तंत्र बेहतर संरचित होता जाता है, वे अधिक सटीक और बेहतर संयोजित प्रत्यक्ष ज्ञान विकसित करते जाते हैं।

बच्चे किसी वस्तु पर शारीरिक और मानसिक क्रियाएँ करके ही संवेगी सूचना प्राप्त कर सकते हैं। कक्षा में जो सामग्री उपलब्ध कराई जाती है, वह बच्चों द्वारा जमा किए गए बटनों या बीजों से लेकर व्यावसायिक उत्पादनों जैसे — नमूना ब्लॉक, पहेलियाँ (puzzles) या रंगीन कागज आदि तक हो सकती हैं। बच्चे उन्हें छाँटते हैं, वर्गीकरण करते हैं, क्रम में लगाते हैं, गिनते हैं और उनकी तुलना करते हैं। बच्चे जब वस्तुओं को हाथ में लेते या सँभालते हैं और यह निरीक्षण करते हैं कि वे कैसे क्रिया या

ब्लॉक निर्माण में कई ठोस क्रियाकलाप शामिल होते हैं जिनमें दोनों ही ज्ञान आते हैं, जैसे — एक से एक की समानता, उद्देश्यपूर्ण गिनती, मिलान करना, छाँटना और ब्लॉक्स को अपने स्थान पर लगाना। ब्लॉक्स की अनोखी एक आकारीय विशेषता रचनात्मक चिंतन और परीक्षण को प्रोत्साहित करती है। ब्लॉक निर्माण एक प्रकार से समस्या समाधान ही है।

प्रतिक्रिया करते हैं, तब वे प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे जब गेंदों को पकड़ते, मारते, गिराते, लुढ़काते और फेंकते हैं तो वे गेंदों की विशेषताओं या गुणों की खोज कर लेते हैं। बच्चों और बड़ों का वस्तुओं को सँभालना और उनका कुशलतापूर्वक प्रयोग करना प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक है। दुनियाभर की दुकानों और संग्रहालयों पर प्रदर्शित संकेत 'छूना मना है' इस बात की पुष्टि करता है। इसका अर्थ है कि हम वस्तुओं के स्पर्श और सँभाल से प्राप्त संवेगी सूचना का तार्किक गणितीय ज्ञान द्वारा विवेचना किए बिना प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। हमें शिक्षकों को अपने बच्चों को नए विचार और अवधारणाओं को सीखने में मदद करने के लिए उन्हें तरह-तरह के ऐसे खिलौने, वस्तुएँ और क्रियाकलाप जो उन्हें खोजने और कुशलतापूर्वक प्रयोग करने की ओर ले जाने वाले हों, मुहैया कराने चाहिए।

बच्चे कैसे सोचते हैं

बड़े होने के साथ-साथ बच्चों की सोच में भी परिवर्तन आता जाता है। 2 – 6 वर्ष की आयु के बीच के बच्चे संज्ञानात्मक विकास की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operational Stage) में होते हैं जबकि 6 – 7 से लेकर 9 या 10 वर्ष का बच्चा पियाज़े के अनुसार मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (concrete operational Stage) में होता है। 'आज 'साक्षी' को पक्का विश्वास है कि पानी की भरी बाल्टी में डालने पर उसका खिलौना डूब जाएगा। कल वह विश्वासपूर्वक अनुमान कर सकती है कि वही

खिलौना तैरेगा। 'प्रिया' निर्णय कर सकती है आपके और उसके जूस से भरे लंबे गिलासों में बराबर मात्रा में संतरे का रस है। यदि आप अपने गिलास का रस कई छोटे पतले गिलासों में उड़ेल देते हैं तो प्रिया निर्णय कर सकती है कि आपके पास उससे अधिक रस है।' पदार्थों को सक्रिय रूप से जाँचते-जाँचते बच्चों को उनके गुणों के बारे में सीखने में वर्षों लग जाते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे धीरे-धीरे ही समझ पाते हैं कि ठोस या द्रव का कुल घन या भार उनके बरतन के आकार में परिवर्तन करने या पदार्थ को विभाजित करने से नहीं बदलता।

पियाज़े द्वारा प्रयुक्त 'क्रिया' शब्द से तात्पर्य 'मानसिक क्रिया' से है जो प्रारंभिक बाल्यावस्था में अकसर शारीरिक क्रिया के साथ-साथ ही होता है। जब हम एक आम या पपीते को यह पता लगाने के लिए निचोड़ते हैं कि वह कितना पका है, तो इसका मतलब होता है कि हम उस फल के बारे में जानना चाहते हैं। हमारी इस क्रिया का महत्वपूर्ण अंश मानसिक क्रिया है जिसके अभाव में बाह्य क्रिया केवल एक विचारहीन क्रिया ही होगी।

भौतिक परिवर्तनों के प्रति प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया का अवलोकन करके वयस्क यह सीखना प्रारंभ कर सकते हैं कि एक छोटा बच्चा कैसे सोचता या विचार करता है जैसे कि क्ले की एक गेंद का अनेक टुकड़ों में टूटना और पूरी गेंद की तुलना में टूटे हुए टुकड़ों में क्ले या मिट्टी की मात्रा का अनुमान लगाना। भौतिक प्रतिक्रिया में बच्चों को यह निश्चित करने के लिए सोचना पड़ता है कि गेंद को किस प्रकार गेंदबाजी जैसे खेल की तरह एक खेल में लुढ़काया जाता है।

यदि वे गेंद को दूर तक दाएँ या बाएँ लुढ़काते हैं और लक्ष्य से चूक जाते हैं तो उन्हें सोचना पड़ता है कि अब आगे क्या करें।

तार्किक गणितीय प्रतिक्रिया में बच्चा कोई वांछित शारीरिक सफलता पाने के लिए वस्तुओं पर क्रिया नहीं करता, बल्कि उनमें संबंध बैठाने के लिए करता है। उदाहरण के लिए, जब एक बच्चे को छह नीले और दो पीले ब्लॉक्स दिए जाते हैं, वह एक जैसे ब्लॉक्स को एक साथ रखता है और जो भिन्न हैं, उन्हें अलग कर देता है। वह ब्लॉक्स को क्रम से स्थान के आधार पर लगा सकता है या उन्हें दो बराबर समूहों में बाँट सकता है।

छोटे बच्चे वस्तुओं में संबंध बैठाने हुए उन पर प्रत्यक्ष रूप से भी क्रिया करते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे वस्तुओं को स्पर्श किए बिना ही उनका समूह बनाना, उन्हें क्रम से लगाना और उन्हें वर्गों में विभाजित करने की योग्यता प्राप्त कर लेते हैं।

संक्षेप में, तार्किक गणितीय क्षेत्र में वस्तुओं को हाथों में उठाना तथा मूर्त पदार्थों का हाथ से अनुभव करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि छोटे बच्चे वस्तुओं के साथ प्रत्यक्ष क्रियाएँ करते समय

बेहतर सोच और कर सकते हैं। अपने परिवेश में वस्तुओं का कुशलतापूर्वक प्रयोग करते हुए वे मूलभूत अवधारणाओं जैसे — एकैक संगति, गिनती, समन्वय, वर्गीकरण, तुलना आदि की समझ प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि हमेशा बच्चों को हाथ में लेने वाली मूर्त वस्तुएँ दी जानी चाहिए क्योंकि कार्यपुस्तकें समस्या समाधान के अपने रास्ते खोजने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित नहीं करतीं। जब हम स्वयं ही छोटे बच्चों को हर समय बताते या पढ़ाते रहते हैं, उनके सामने ज्ञान प्रस्तुत करते रहते हैं तो हम उनकी पहल करने की इच्छा को दबा देते हैं, उनके विश्वास को कम करते हैं।

बच्चे हर स्थिति में अपने परिवेश और आस-पास के लोगों के बारे में सीखते रहते हैं। वस्तुओं या पदार्थों का कैसे प्रयोग किया जाए, वे सीख जाते हैं। रेत छानने और डालने के लिए है, फेंकने के लिए नहीं; पुस्तकें पढ़ने के लिए हैं, फाड़ने या हथियार की तरह इस्तेमाल करने के लिए नहीं।

चिंतन के लिए परिवेश का निर्माण

पूर्व विद्यालयी बच्चों (Preschoolers) के सामने सोचने और अपनी कल्पना को रूप देने की चुनौती

बच्चों को विकल्प देना (मैं यह कर सकता हूँ)

प्रारंभिक शैशवावस्था से ही बच्चे अपने द्वारा और अपने लिए कुछ करने की आवश्यकता को अभिव्यक्त करते हैं। नए विकासात्मक कार्य पूरे करने का प्रयास करते समय बच्चे आत्मसंतुष्टि से वृद्धि करते हैं। यदि एक देखभालकर्ता बच्चों की जरूरतों को योग्यताओं के साथ जोड़ना सीख लेता है तो उसके बच्चे असफलता के मुकाबले सफलता के साथ अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त करेंगे।

“इसे कैसे ठीक करना है, मैं कर सकता हूँ।”

“मैं तैर सकता हूँ।” “मैं अपने घर का चित्र बना सकता हूँ।”

रखी जा सकती है। सोचने या चिंतन को प्रोत्साहित करने के तीन तरीके हैं जो अक्सर साथ-साथ ही इस्तेमाल होते हैं। एक है — ऐसी स्थितियों का प्रयोग या निर्माण करना जो बच्चों के लिए व्यक्तिगत रूप से अर्थपूर्ण हों, जैसे — गिलास, चम्मच या नेपकिन को अपने दोस्तों या परिवार के लिए आगे पकड़ाना।

बच्चों के चिंतन को प्रोत्साहित करने का दूसरा तरीका है उन्हें निर्णय लेने के अवसर प्रदान करना। किसी भी खेल में बच्चों को स्वयं निर्णय लेने दें जैसे — किसने सबसे ज्यादा बार गेंद गिराई या सीखने के प्रत्येक क्षेत्र में कितने बच्चे होने चाहिए या केंद्र के नियमों की सीमा में ही बच्चों को विकल्प देना। इस प्रकार बच्चों को पहल करके अपने कार्यों की जिम्मेदारी उठाना सीखना ज़रूरी होता है। बजाय इसके कि शिक्षक सभी निर्णय स्वयं करें, बच्चों को जिम्मेदारी सौंपना और निर्णय लेने की अनुमति देना, उन्हें अधिक गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है। जिन बच्चों को 'क्या और कैसे सीखें' के लिए विकल्प दिए जाते हैं, वे अधिक सीखते हैं और सीखने के प्रति उनका नज़रिया भी बेहतर बनता है। लेखक एलफ़्रिक कॉन कहते हैं कि बिना विकल्पों के बच्चे भी वयस्कों की भाँति अक्रियाशील हो जाते हैं। यही कारण है कि कई बार बच्चे अपने आपको शक्तिहीन समझने लगते हैं और उदासीन या आक्रामक होकर प्रतिक्रिया करते हैं। बच्चों को एक कोलाज बनाने के लिए यदि सामग्री चुनने की छूट दी जाती है तो वे अधिक सृजनात्मक ढंग से कार्य करते हैं। बच्चों की पसंद शिक्षा के समग्र, रचनावादी शिक्षार्थी केंद्रित या विकासात्मक दृष्टिकोण का एक मुख्य घटक है।

बच्चों के चिंतन को बढ़ावा देने का तीसरा तरीका है — उन्हें अपने साथियों के साथ विचारों के आदान-प्रदान के अवसर प्रदान करना। क्या होगा यदि ----- वाले ढेरों प्रश्न पूछें। जैसे — क्या करोगे अगर तुम्हारा प्रिय खिलौना एक ऊँची अलमारी के ऊपर रखा है?

बच्चे उस समय अधिक गहराई से सोचते हैं उदाहरण के लिए, जब एक बच्चा कहता है कि एक खास तरीके से गेंदों के रखने से उन्हें गिराना आसान होता है और दूसरे बच्चे का विचार इससे बिल्कुल अलग होता है। जोड़-तोड़ वाली वस्तुओं के साथ कार्य या क्रियाएँ करने से संवादों के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है, जबकि कार्यपुस्तकें इस प्रकार के संवादों के आदान-प्रदान पर रोक लगा देती हैं। अपनी सीट या कुर्सी पर बैठे-बैठे कार्यपत्रिका पर काम करते रहने से बच्चों को सहमति या असहमति प्रकट करने का अवसर ही नहीं मिलता। दूसरी तरफ, वस्तुओं या पदार्थों के साथ क्रियाएँ करते हुए बच्चों का बौद्धिक और सामाजिक विकास होता है।

केवल वस्तुओं को हाथ में लेना और सँभालना ही बच्चों के सीखने के लिए आवश्यक नहीं है। आवश्यक है मानसिक क्रिया जो वस्तुओं के साथ स्वयं क्रिया करते समय होती है। यह एक शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह अपने बच्चों को सक्रिय बनाना चाहता है या निष्क्रिय। जब शिक्षक निर्णय लेने का सारा अधिकार अपने पास रखता है तो इसके फलस्वरूप बच्चे मानसिक रूप से निष्क्रिय हो जाते हैं क्योंकि उन्हें निर्णय लेने, अपना पक्ष रखने, विचारों का आदान-प्रदान करने से रोक दिया जाता है।

इस विषय का मूल यह है कि बच्चों का क्रियाशील होना आवश्यक है। हमें एक ऐसे परिवेश का निर्माण करना चाहिए जिसमें बच्चों को वस्तुओं के साथ क्रियाएँ करते समय सोचने के पर्याप्त अवसर मिलें। कार्यपत्रिकाओं का भी प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होना ज़रूरी है। अतः शिक्षकों और अभिभावकों को शिक्षण के सुनिश्चित अभ्यास के तरीकों से परे आगे बढ़ना चाहिए। बच्चों के चिंतन को प्रोत्साहित करने के लिए अपने तरीके इस्तेमाल करने की पहल करनी चाहिए।

मदद करने वाले बच्चे आजीवन स्वतंत्र और उत्साही विद्यार्थी बनते हैं। क्या अच्छा शिक्षण

इसी के बारे में नहीं है? उपर्युक्त बातचीत के आधार पर शिक्षकों की अग्रलिखित भूमिका उभर कर आती है —

- इस तथ्य के प्रति संवेदनशील रहें कि बच्चों की पहल और सृजनात्मक हमारी सीमित अपेक्षाओं और प्रदर्शनों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
- बच्चों के भावात्मक विकास की अवस्थाओं और उनके बौद्धिक समझ के साथ संबंधों को समझें।
- बच्चों की विशिष्ट और सही प्रशंसा करें।
- सभी बच्चों पर समान रूप से ध्यान दें और सफलता के लिए बराबर अवसर दें।
- बच्चों की रुचियों और जिज्ञासाओं का पूरा लाभ उठाएँ।

संदर्भ

- ए. जूडिथ. स्टिक केडांग और मैरी ई. यार्क. 1983. *स्ट्रेटेजीस फ़ार टीचिंग यंग चिल्ड्रेन* (दूसरा संस्करण). प्रैन्टिस हॉल, न्यू जर्सी. कामी, सी. और डेवरिस. 1976. *पियाजे चिल्ड्रेन एंड नंबर, नेशनल एसोसिएशन फ़ॉर द एजुकेशन ऑफ़ यंग चिल्ड्रेन.*, वाशिंगटन डी. सी.
- कैटर्न ई. कैरोल. 1999. *एलन जैन अर्ली चाइल्डहुड करीकुलम* (दूसरा संस्करण). प्रैन्टिस हॉल, न्यू जर्सी.
- कौल, विनीता. 2014 *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन प्रोग्राम*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.
- सोनी, आर. 2014 *एवरी चाइल्ड मैटर्स*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.